पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-३२ सोमवार, ३० मार्च २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये इंदौर,मुंबई से एक साथ प्रकाशित

माया कोडनानी ने दिया इस्तीफा

अहमदाबाद । गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा जमानत की अर्जी खारिज होने पर राज्य सरकार की मंत्री कोडनानी की गिरफ्तारी की खबरों के बीच कोडनानी ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है। उनपर दंगे के दौरान एक भीड़ की अगुवाई करने का आरोप है। गुजरात उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को सुनवाई करते हुए उनकी अग्रिम जमानत के लिए दाखिल याचिका खारिज कर दी। कोडनानी पर वर्ष 2002 के गुजरात दंगों के दौरान नारोदा पटिया और नारोदा गाम क्षेत्रों में भीड़ की अगुवाई करने का आरोप है, जिसमें 106 लोग मारे गए थे। गुजरात के उच्च न्यायालय के वकील मुकुल सिन्हा ने बताया, ''माया कोडनानी की जमानत की अर्जी खारिज कर दी गई है और उन्हें शाम तक गिरफ्तार किया जा सकता है।''

मनमोहन प्रधानमंत्री एक तीर - दो शिकार

गांधी परिवार के त्याग को फिर भुनायेगी कांग्रेस

कांग्रेस ने अपना प्रधानमंत्री प्रत्याशी घोषित कर एक तीर से दो शिकार किये हैं. मनमोहन सिंह को अगली बार भी प्रधानमंत्री बनाने का सोनिया गांधी का ऐलान भाजपा के उस सवाल का जवाब है जिसमें बार-बार यह कहकर कांग्रेस को कटघरे में खड़ा करने की कोशिश की जा रही थी कि वह अपना प्रधानमंत्री तो घोषित करे. वहीं सोनिया ने स्वयं एवं अपने बेटे राहुल को प्रधानमंत्री की दौड़ से बाहर कर एक बार फिर त्याग की भावना को भुनाने का नायाब पासा फेंका है. उनका यह पासा जहां विरोधियों को बैकफुट पर ले जाएगा वहीं कांग्रेस के लिये चुनाव में प्लस पॉइंट साबित होगा.

सोनिया गांधी ने यह ऐलान करके कि मनमोहन सिंह ही पार्टी के पीएम कैंडिडेट हैं, जाहिर कर दिया कि कांग्रेस इस संबंध में अपनी दुविधा से बाहर निकल चुकी है. इस फैसले में निश्चय की स्पष्टता और दृढ़ता झलक रही है. यह कांग्रेस की रणनीति में एक बड़े बदलाव का सूचक है.

आम तौर पर उसे प्रधानमंत्री पद के अपने उम्मीदवार के बारे में घोषणा करने की कभी जरूरत ही नहीं पड़ी. विपक्षी दलों के साथ जनता को भी कांग्रेस के पीएम कैंडिडेट को लेकर कोई संशय नहीं रहा. एकाध अवसर ऐसे आए जब यह सवाल उठा, लेकिन तब भी फैसला चुनाव के बाद ही हुआ विधानसभा चुनावों में भी प्रायः कांग्रेस ने कभी चुनाव के पहले किसी नेता की मुख्यमंत्री के रूप में प्रोजेक्ट नहीं किया. इसलिये इस बार यह माना जा रहा था कि कांग्रेस प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार को लेकर चुनाव के पहले, अंतिम रूप से कुछ नहीं कहेगी. कांगेस के कुछ नेता जिस तरह के बयान दे रहे थे, उससे भी यह धारणा मजबूत हो रही थी, लेकिन सोनिया गांधी ने मनमोहन सिंह के नाम पर मुहर लगाकर सबको चकित कर दिया. उन्होंने इसके माध्यम से विपक्ष, अपने सहयोगी दलों और खुद अपनी पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं को भी संकेत देने की कोशिश की है.

पिछले कुछ समय से बीजेपी ने खास तौर से इसे एक मुद्दा बना रखा था. उसके कुछ नेता तो कांगेस को लगभग चुनौती देते हुए कहते थे कि वह अपना पीएम कैंडिडेट घोषित करके दिखाए, लेकिन अब कांग्रेस ने पीएम कैंडिडेट के बारे में ठोस स्टैंड लेकर उन्हें करारा जवाब दिया है.

इस निर्णय का महत्व खुद कांग्रेस के लिये कहीं ज्यादा है. कांग्रेस में एक तबका मनमोहन सिंह के नेतृत्व पर दबी जुबान में सवाल उठाता रहा है और उन्हें किनारे करने के मकसद से राहुल गांधी को सामने लाने पर जोर देता रहा है. अब सोनिया गांधी ने इन नेताओं को भी जता दिया है कि वे कोई मंसूबा न पालें और नेतृत्व को लेकर भ्रम न फैलाएं. निःसंदेह यह गुटबाजी पर रोक लगाने और पार्टी को एकजुट करने की उनकी कोशिश है. यूपीए के कुछ सहयोगी दल कभी कांग्रेस में चल रही नेतृत्व की बहस को पार्टी की कमजोरी के रूप में देखते रहे हैं. अब उनका भी भ्रम दूर हो जाना चाहिए. असल में सोनिया गांधी और कांग्रेस के रणनीतिकारों को यह अहसास है कि आज की परिस्थितियों में नेतृत्व परिवर्तन जोखिमभरा कदम हो सकता है.

बेरहमी की घुट्टी

इसे मंदी का ही असर कहा जाए कि इस बार लोकसभा चुनाव में कार्पोरेट घराने फंडिंग नहीं करना चाहते हैं। खुल्मखुल्ला बयान में सुबोध भार्गव ने कह ही दिया। वहीं राजनिती के गलियारों में यह राज भी खुल गया कि अब तक चुनावी खर्च बड़े व्यापारिक घराने उठाते रहे हैं। इस बार अपने कर्मचारियों और परिवारों के खर्च में ये घराने यू भी कटौती कर रहे हैं। ऐसे में यह खर्च सफेदपोशों पर कैसे किया जा सकता है। चुनाव के खर्च इंटरनेट से लेकर पोस्टरों तक तो है ही इसके साथ ये दिन

उत्तम झंवर

छुटभैयों की दिवाली भी होती है। मुफ्त की शराब और कबाब का इन दिनों अतिसार रहता है। इधर सियासतदारों की मजबूरी ये है कि बड़े प्रतिद्वंद्वियों के साथ बागीयों की एक फौज को भी संभालना है। हर क्षेत्र में वे सभी पार्टियां अब सिर उठा रही हैं जिनके अस्तित्व न के बराबर हो चुके थे। अपनी पार्टियों से असंतोष रखने वाले लोग भी इसमें शामिल हो रहे हैं। इसमें इन लोगों को फायदा ये हो सकेगा कि कुछ मोटी रकम लेकर पक्षधर बनने की बात पर इन्हे सहमत कर लिया जाएगा।

एक सवाल मेरे जेहन में कौंध रहा है बराक ओबामा की चुनावी तैयारियों के दौरान ही लोगों ने उन्हे अपना नेता मानना शुरू कर दिया था। हम यदि सभी पार्टियों की लिस्ट सामने रखे तो जमीना स्तर पर भी ऐसे लोग हमें नहीं मिल पाएंगे। दरअसल माया (मायावती भी) सर्वोपरि होने के कारण हर व्यक्ति का दीनोइमान यहीं आकर रूक रहा है। पिछले दिनों रूपयों की लालच में सिद्धार्थ नाम के बेटे ने माता–पिता को चाकुओं से गुदवा दिया। माता–पिता ने उसे पालपोस कर सबसे बड़ा गुनाह किया। बेरहमी की यह घुट्टी जाने वो कहां से पी आया?

प्रहलाद-कमलनाथ के हवाले महाकौशल

प्रदेश के महाकौशल अंचल में भारतीय जनता पार्टी बड़ी राहत में है कि उसे क्षेत्र के कद्दावर नेता प्रहलाद पटेल का साथ इस चुनाव में फिर मिल गया. महाकौशल में भाजपा के पास जमीन से जुड़े नेता का अभाव था, जो प्रहलाद की वापसी से पूरा हो गया. दूसरी ओर कांग्रेस की चुनौती का दारोमदार फिर केन्द्रीय मंत्री कमलनाथ पर रहेगा. महाकौशल के टिकटों के वितरण में कमलनाथ का प्रभाव रहा. प्रहलाद पटेल पिछले चुनाव में भले ही छिंदवाड़ा सीट पर कमलनाथ से जीत नहीं पाए पर उन्होंने कमलनाथ को छिंदवाड़ा सीट पर बांधकर रख दिया था. भाजपा कमलनाथ को उलझाने की रणनीति बना रही है. महाकौशल में वैसे भी भाजपा का जनाधार मजबूत है तथा पिछले विधानसभा चुनाव में वह कमलनाथ के निर्वाचन क्षेत्र में भी सेंध लगा चुकी है.

शेष अंतिम पेज पर....